11

क्रूस से कथन

मत्ती 27; मरकुस 15;
लूका 23; यूहन्ना 19

''तब यीशु ने कहा; हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं?'' (लूका 23:34)।

क्रूस की तरह और कोई वस्तु परमेश्वर को नहीं दिखाती और क्रूस पर चढ़ाए जाने की तरह कोई अन्य मनुष्य को भी नहीं दिखाता। क्रूस घृणित और खुरदरा है: क्रूस पर मृत्यु केवल परमेश्वर ही समझ सकता था। क्रूस दिया जाना अपमान, दु:ख और कष्ट भरा होता था।

क्रूस से हमें विशेष दर्शन की उम्मीद नहीं होगी, पर इससे इतिहास के कई महान वाक्य कहे गए हैं। क्रूस पर यीशु ने सात वचन कहे। पहले तीन वचन दूसरों पर केन्द्रित थे, जबकि अन्तिम चार उसके लिए थे।

क्षमा। पहले यीशु ने कहा, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं?'' (लूका 23:34)। यह एक प्रार्थना थी, न कि घोषणा। यीशु पहला और अन्तिम वचन अपने पिता के सामने प्रार्थना का था।

यीशु ने अपने सताने वालों के लिए क्षमा मांगी। परन्तु परमेश्वर की क्षमा पाने के लिए, यीशु को क्रूस पर चढ़ाने वालों के लिए अपने आप को परमेश्वर को सौंपना आवश्यक था।

यीशु ने उनकी ओर नीचे देखा, जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था और कहा, ''मैं चाहता हूं कि तुम आज ही परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली क्षमा को जान लो।'' क्रूस पर मरने वाले प्रार्थना कम ही करते थे। हत्यारों के लिए प्रार्थना की बात तो सोची ही नहीं जा सकती थी, परन्तु यीशु ने अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना की। मरते-मरते यीशु ने उनके लिए क्षमा की प्रार्थना की, जो परमेश्वर के पुत्र की हत्या का अपराध कर रहे थे। कई विद्वानों का मानना है कि यीशु ने सताव के अपने पहले घण्टों के दौरान यह वाक्य कई बार दोहराया। क्रूस क्षमा का सबसे बड़ा प्रदर्शन है, जो संसार ने कभी देखा हो।

मुक्ति। यीशु ने अपने साथ क्रूस पर चढ़े डाकू से कहा, ''... आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'' (लूका 23:43)। पहला वचन साधारण लोगों के लिए था और दूसरा विशेष रूप से डाकू के लिए। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि वह पश्चात्तापी डाकू मरने के बाद उसके साथ होगा।

क्या यह डाकू हमसे अधिक खोया हुआ था? पाप के साथ करने वाले पापियों को बचाने के लिए लहूलुहान उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है! यीशु को पाप क्षमा करने का अधिकार था (मत्ती

9:6; मरकुस 2:10; लूका 5:24)।

यशायाह नबी ने कहा था कि यीशु अपराधियों के साथ गिना जाएगा (यशायाह 53:12)। उसे दो डाकुओं के बीच क्रूस पर चढ़ाया जाएगा।

ज़िम्मेदारी। यीशु ने कहा, ''हे नारी, देख यह तेरा पुत्र है!'' (देखें यूहन्ना 19:26, 27)। यीशु ने ''हे नारी'' माता मरियम को कहा और ''पुत्र'' यूहन्ना को।

यीशु ने अपनी माता को देखा। उसकी देखभाल के लिए यूहन्ना को यह कहते हुए कि ''यूहन्ना उसका ध्यान रखना'' यीशु को अपना दु:ख भूल गया था, परन्तु यह दु:ख भूला ही नहीं रहा। उस दिन के लिए यह आवश्यक था।

पीड़ा। ''हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34)। यह भजन संहिता 22:1 से लिया गया संदर्भ है। इसके बाद यीशु के शब्द अपने आप और पिता पर केन्द्रित थे।

यह क्षण पूरे अनादिकाल में एक ही समय आया था, जब परमेश्वर और यीशु अलग हुए थे। हैरानी की बात नहीं कि बाग में यीशु ''बहुत उदास था, यहां तक कि उसके प्राण निकलना चाहते हैं'' (मत्ती 26:38)।

परमेश्वर ने यीशु को नहीं, बल्कि पाप को छोड़ा था! परमेश्वर उन पापियों को छोड़ देता है, जिन्होंने उसे छोड़ा है। यीशु ने क्रूस पर परमेश्वर को दो बार पुकारा। यहां उसने पाया कि परमेश्वर ने परमेश्वर ही रहना था। परमेश्वर को हमें हमेशा के लिए अपनाने के लिए थोड़ी देर के लिए अपने पुत्र को छोड़ना पड़ा। क्रूस का कुछ भेद इसमें भी है।

जैसे आमतौर पर होता है, मनुष्य को समझ नहीं आया। लोगों को लगा कि यीशु *एल्लियाह* को पुकार रहा है! यीशु को कीलों का या मृत्यु का भय नहीं था, पर पाप बनने की तनहाई ने उसे कंपकंपी लगा दी थी। उसके लिए यह कितना भयानक था! यीशु को वह सब बनाया गया, जो परमेश्वर की दृष्टि में पाप है और उसे अकेले ही उस संताप को सहना पड़ा! उसने अपने आप को बचाने की थोड़ी सी भी कोशिश नहीं की। दूसरों के लिए उसकी मृत्यु की यही गहराई है। अगर उसने हमें बचाना था तो वह अपने आप को नहीं बचा सकता था। वह दोनों काम नहीं कर सकता था।

प्यासा। छह घण्टे बाद उसने कहा, ''मैं प्यासा हूं'' (यूहन्ना 19:28; KJV)। उसके इन शब्दों से एक और भविष्यवाणी पूरी हुई (भजन संहिता 69:21)।

क्रूस पर कही यीशु की हर बात सुसमाचार के प्रत्येक विवरण में नहीं लिखी गई है। मूल रूप में हर लेखक ने वही दिखाया है, जो दूसरों ने नहीं दिखाया।

यीशु क्रूस पर रहने के समय पूरे होशो-हवास में रहा। पहले उसने बेहोश करने के लिए दी जाने वाली दवा लेने से इनकार कर दिया था। अब उसने होश में रहने के लिए पानी मांगा। क्रूस पर उसने अपना धीरज और चौकसी बनाए रखी।

क्रूस पर सहे गए उसके सब कष्टों और परेशानियों में से केवल प्यास का ही विवरण मिलता है। क्रूस पर इन तीन शब्दों में यीशु द्वारा अपनी शारीरिक आवश्यकता को बताया गया है। उसने अपने लिए केवल यही एक विनती की। छोटे से उसके वाक्यांश में सोचने को विवश करने वाली शक्ति है। यीशु ने पानी उस समय मांगा जब उसने देखा कि सब काम पूरा हो गया (यूहन्ना 19:28)।

विजय। उसने कहा, ''पूरा हुआ है!'' (यूहन्ना 19:30)। यूनानी भाषा में यह एक ही शब्द *tetelestai* है। आज तक कहा जाने वाला सबसे बड़ा एकमात्र शब्द यही है। यीशु ही एक शब्द से उद्धार की पूरी योजना को समझा सकता था।[1]

अपने उद्धार का अर्थ समझने के लिए हमें पूरा अनादिकाल लगेगा! केवल यीशु ही वह व्यक्ति है, जिसने वह काम पूरी तरह किया, जो परमेश्वर करना चाहता था! उसने कहा, ''*टेटेलेस्टाई!*'' यीशु परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए आया था। उसने की भी! पाप में खोए हुए मनुष्य को अब एक उद्धारकर्त्ता मिल गया है। *हैलेलुय्याह!*

विश्वास। यीशु ने कहा, ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं'' (लूका 23:46)। वह किसी आशंका में नहीं मरा। वह आनन्द से विश्वास में मरा!

हां, एक मानवीय अर्थ में मनुष्य ने यीशु की हत्या की, परन्तु एक अन्य अर्थ में मनुष्य ने उसे नहीं मारा। यीशु ने स्वयं चुना कि कब मरना है और कब जी उठना है। उसने कहा, ''कोई उसे [मेरा प्राण] मुझ से छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूं: मुझे उसे देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है'' (यूहन्ना 10:18)। यीशु ने पिलातुस को बताया कि उसे सामर्थ केवल परमेश्वर से मिली है (यूहन्ना 19:10, 11)। मसीह के प्राण उससे लिए नहीं गए थे, बल्कि उसने अपनी इच्छा से पिता को सौंपे थे।

यह विचार करें कि यीशु जीवित कैसे रहा! विचार करें कि यीशु मरा कैसे! उसके अन्तिम शब्दों ने भी लिखे हुए को पूरा किया (भजन संहिता 31:5)। यीशु अर्थात वचन ने (यूहन्ना 1:1) ''सुसमाचार'' का सम्मान किया। हमें भी इसके साथ ऐसा ही करना चाहिए!

यीशु जीतकर बोला!

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]मनुष्यजाति को पाप से बचाने की परमेश्वर की योजना (देखें इब्रानियों 2:9)।